6 तन देख्या अथिर घिनावना

तन देख्या अथिर घिनावना ।। तन. । । टेक ।।

बाहर चाम चमक दिखलावै, माहीं मैल अपावना ।
बालक जवान बुढापा मरना, रोगशोक उपजावना ।। १ ।। तन. ।।

अलख अमूरति नित्य निरंजन, एकरूप निज जानना ।
वरन फरस रस गंध न जाकै, पुण्य पाप विन मानना ।।२ ।। तन. ।।

करि विवेक उर धारि परीक्षा, भेद- विज्ञान विचारना ।
'बुधजन' तनतें ममत मेटना, चिदानंद पद धारना ।। ३ ।। तन. ।।

मैंने शरीर का स्थिर और घिनौना रूप देख लिया है॥ टेक॥

बाहर से तो यह शरीर अथवा चमडी सुन्दर दिखाई देती है परंतु अंदर इस अस्थिर देह के पीछे अपवित्र मैल ही मैल है। यह शरीर बालक, युवावस्था, वृद्धावस्था और मृत्यु के स्वरूप वाला है और रोग और शोक को उत्पन्न करने वाला है॥ १॥

मैं तो इंद्रियों से पार, अमूर्तिक, सदा रहने वाला, विकार रूपी कालिमा से रहित एक रूप निज स्वभाव वाला हूँ। मेरे चैतन्य में वर्ण, स्पर्श, रस, गंध नहीं है और मेरी आत्मा में पुण्य पाप के परिणाम भी नहीं हैं॥ २॥

कविवर बुधजनजी कहते हैं कि हृदय में भेदज्ञान धारण करके देह और आत्मा की परीक्षा करना और सम्यक दर्शन की प्राप्ति करना चाहिये। शरीर की में एकत्व भाव को नष्ट करके चिदानंद पद को धारण करना चाहिए॥ ३॥